Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) _____

   (Name) _____

2. (Signature) _____

   (Name) _____

Roll No. | | | | | | | |
(In figures as per admission card)

Roll No. _____
(In words)

Test Booklet No.

J–7308

PAPER–III
SANSKRIT TRADITIONAL SUBJECT

Time : 2½ hours] **[Maximum Marks : 200**

Number of Pages in this Booklet : **40** Number of Questions in this Booklet : **26**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answers to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Test Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the question booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the Test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc. is prohibited.**
10. **There is NO negative marking.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुये रिक्त स्थान पर ही लिखिये।

   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी। पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी सील को फाड़ लें। खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं। दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ / प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें। इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे। उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा।**
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें।
8. **केवल नीले / काले बाल प्वाईंट पैन का ही इस्तेमाल करें।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है।**
10. **गलत उत्तर के लिए अंक नहीं काटे जायेंगे।**

संस्कृत-परम्परागत-विषयः

SANSKRIT TRADITIONAL SUBJECT

प्रश्नपत्रम्—III

प्रश्न-पत्र—III

PAPER—III

टिप्पणी : अस्य प्रश्नपत्रस्य शतद्वयम् (200) अङ्काः सन्ति एवम् अस्मिन् चत्वारि (4) खण्डानि सन्ति। अभ्यर्थिभिः एषु समाहितानां प्रश्नानामुत्तरं पृथग्विहितविस्तृत निर्देशानुसारं देयम्।

नोट : यह प्रश्नपत्र दो सौ (200) अंकों का है एवं इसमें चार (4) खंड है। अभ्यर्थियों को इन में समाहित प्रश्नों का उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है।

NOTE: **This paper is of two hundred (200) marks containing four (4) sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.**

खण्डम् – I
खण्ड – I
SECTION - I

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे निम्नाङ्कितानुच्छेदानाश्रित्य पञ्च **(5)** प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकम्प्रश्नः प्रायः त्रिंशत् **(30)** शब्दैः समपेक्ष्यते। प्रत्येकम्प्रश्नः **(5)** पञ्चाङ्कोऽस्ति। **(5x5=25 अंङ्काः)**

नोट : इस खंड में निम्नलिखित अनुच्छेद पर आधारित पाँच **(5)** प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग तीस **(30)** शब्दों में अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पाँच **(5)** अंकों का है। **(5x5=25 अंक)**

Note : This section contains five **(5)** questions based on the following paragraph. Each question should be answered in about thirty **(30)** words and each carries five **(5)** marks. **(5x5=25 marks)**

अस्ति श्रीपर्वतमध्ये ब्रह्मपुराख्यं नगरम्। तच्छिखरप्रदेशे घण्टाकर्णो नाम राक्षसः प्रतिवसतीति जनप्रवादः श्रूयते। एकदा घण्टामादाय पलायमानः कश्चिच्चौरो व्याघ्रेण व्यापादितः। तत् पाणिपतिता घण्टा वानरैः प्राप्ता। वानरास्तां घण्टामनुक्षणं वादयन्ति। ततो नगरजनैः स मनुष्यः खादितोद्दृष्टः। प्रतिक्षणं घण्टारवश्च श्रूयते। अनन्तरं 'घण्टाकर्णः कुपितो मनुष्यान् खादति घण्टां च वादयती' त्युक्त्वा सर्वेजना नगरात् पलायिताः। ततः करालया नाम कुट्टन्या विमृश्यानवसरोऽयं घण्टानादः। तत्किं मर्कटा घण्टां वादयन्तीति स्वयं विज्ञाय राजा विज्ञापितः। देव! यदि कियद्धनोपक्षयः क्रियते, तदाहमेनं घण्टाकर्णं साधयामि। ततो राज्ञा तस्यै धनं दत्तम्। कुट्टन्या च मण्डलं कृत्वा तत्र गणेशादिपूजागौरवं दर्शयित्वा स्वयं वानरप्रिय-फलान्यादाय वनं प्रविश्य फलान्याकीर्णानि। ततो घण्टां परित्यज्य वानराः फलासक्ता बभूवुः। कुट्टनी च घण्टां गृहीत्वा नगरमागता सर्वजनपूज्याऽभवत्। 'अतोऽहं ब्रवीमि – ''शब्दमात्रान्न भेतव्यम्'' इत्यादि।

1. चौरः कथं केन च व्यापादितः ?

2. कुट्टन्या किं विचारितम्?

3. कुट्टन्याः गणेशादिपूजनकारणं लिखत?

4. अनेन का शिक्षा प्राप्यते ?

5. गद्यखण्डस्यास्य सारांशं लिखत ?

खण्डम् – II

खण्ड – II

SECTION - II

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे **(5)** पञ्चाङ्कात्मकाः पञ्चदश **(15)** प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकं प्रश्नस्य उत्तरं प्रायः त्रिंशत् **(30)** शब्दैरपेक्ष्यते।

(5x15=75 अंङ्काः)

नोट : इस खंड में पाँच-पाँच **(5-5)** अंकों के पंद्रह **(15)** प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग तीस **(30)** शब्दों में अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पाँच **(5)** अंकों का है।

(5x15=75 अंक)

Note : This section contains fifteen **(15)** questions each to be answered in about thirty **(30)** words. Each question carries five **(5)** marks.

(5x15=75 marks)

6. सूर्यग्रहणस्य प्रभावं वर्णयत।

सूर्यग्रहण के प्रभाव का वर्णन कीजिए।

Describe the effects of सूर्यग्रहण.

7. वैधृति-व्यतीपातादि योगानां महत्वं प्रदर्शयत।

वैधृति-व्यतीपातादि योगों का महत्व प्रदर्शित करें।

Bring the importance of वैधृति-व्यतीपातादि योगs.

8. कर्मकारकं ससूत्रं निरुच्य वाक्येषूदाहरत।

कर्मकारक को सूत्रसहित निरूपित करके वाक्यों में प्रदर्शित कीजिए।

Define कर्मकारक with सूत्राs and illustrate it in sentences.

9. 'वयसिप्रथमे' इति सूत्रं सोदाहरणं व्याख्यात।

'वयसिप्रथमे' इस सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

Explain the सूत्र 'वयसिप्रथमे' with examples.

10. ब्राह्मविवाहस्य स्वरूपं प्रतिपादयत :

ब्राह्मविवाह का स्वरूप प्रतिपादन कीजिए।

Explain the nature of ब्राह्मविवाह.

11. आर्थीभावनां सोदाहरणं वर्णयत :
उदाहरण सहित आर्थीभावना का वर्णन कीजिए।
Describe आर्थीभावना with example.

12. तेजसः लक्षणमुक्तवा तद्भेदान् प्रदर्शयत।
तेजस का लक्षण बताकर उसके भेद लिखिए।
Defining the तेजस्, bring out its varieties.

13. गुणत्रयस्वरूपं विवेचयत।

गुणत्रय के स्वरूप का विवेचन कीजिए।

Elucidate the nature of गुणत्रय.

14. राजधर्मान् निरूपयत।

राजधर्म का निरूपण कीजिए।

Point out राजधर्म.

15. अथर्ववेदस्य प्रतिपाद्यविषयं प्रतिपादयत।

अथर्ववेद के प्रतिपाद्यविषय का निरूपण कीजिए।

Point out the subject matter of अथर्ववेद.

16. वैदिक क्षेत्रे सायणस्य योगदानं लिखत।

वैदिक क्षेत्र में सायण के योगदान पर प्रकाश डालिए।

Point out the contribution of सायण to Vedic field ?

17. अर्थान्तरन्यासालङ्कारस्य लक्षणं प्रतिपादयत :

अर्थान्तरन्यासालङ्कार के लक्षण का प्रतिपादन कीजिए।

Explain the defination of अर्थान्तरन्यासालङ्कार.

18. नायकभेदान् वर्णयत :

नायक के भेदों का वर्णन कीजिए।

Describe the types of नायक.

19. सत्कार्य-असत्कार्यवादयोः तारतम्यं प्रदर्शयत।

सत्कार्यवाद और असत्कार्यवादों में तारतम्य प्रदर्शित कीजिए।

Explain the difference between सत्कार्यवाद and असत्कार्यवाद.

20. अध्यासं सदृष्टान्तं वर्णयत।

उदाहरण सहित अध्यास के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

Explain अध्यास with example.

खण्डम् – III
खण्ड – III
SECTION - III

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे प्रत्येकम् ऐच्छिकेवर्ग:/विशेषज्ञतानुसारं पञ्च (5) प्रश्ना: सन्ति। अभ्यर्थिना केवलमेकमेवैच्छिक वर्गं/विशेषज्ञताम् आश्रित्य तस्मादेव प्रञ्च प्रश्ना: समाधेया:। प्रत्येकं प्रश्न: (12) द्वादशाङ्कात्मकोऽस्ति, एवं तदुत्तरं प्राय: शतद्वय (200) शब्दै:अपेक्ष्यते।

(12x5=60 अंङ्का:)

नोट : इस खंड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता से पाँच (5) प्रश्न हैं। अभ्यर्थी को केवल एक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता को चुनकर उसी में से पाँचो प्रश्नों का उत्तर देना है। प्रत्येक प्रश्न बारह (12) अंकों का है व उसका उत्तर लगभग दो सौ (200) शब्दों में अपेक्षित है।

(12x5=60 अंक)

Note : This section contains five (5) questions from each of the electives / specialisations. The candidate has to choose only one elective / specialisation and answer all the five questions from it. Each question carries twelve (12) marks and is to be answered in about two hundred (200) words.

(12x5=60 marks)

फलितज्योंतिषम्

21. जन्मपत्रे कालपुरुषस्य स्थानं वर्णयत।
जन्मपत्र में कालपुरुष का स्थान लिखें।
What is the place of कालपुरुष in जन्मपत्र ?

22. योगानाम् फलम् लिखत।
योगों का फल लिखें।
Write the फल of योगs.

23. पितृदोषस्य शमनोपायं लिखत।
पितृदोष के शमनोपाय लिखें।
Write the शमनोपाय of पितृदोष.

24. वरकन्ययोर्मेलापकं लिखत।
वरकन्या का मेलापक लिखें।
Write the मेलापक of वरकन्या.

25. शुभग्रहाणाम् वर्णनं कुरुत।
शुभ ग्रहों का वर्णन करें।
Describe the शुभग्रह.

सिद्धान्तज्यौतिषम्

21. क्रूरसंज्ञक नक्षत्राणाम् नामानि विलिख्य फलं वर्णयत।
क्रूरसंज्ञक नक्षत्रों का नाम लिखकर फल बताइए।
Mentioning the Names of क्रूरसंज्ञक नक्षत्र describe their effects.

22. ग्रहाणाम् नीचोच्चभेदं प्रदर्शयत। कस्यां राशौ कस्य ग्रहस्याधिपत्यम्? इति वर्णयत।
ग्रहों के ऊँच और नीच भेदों को बताइए। किस राशि में कौन से ग्रह का अधिपत्य है स्पष्ट कीजिए।
Bring out the नीचोच्चभेद of ग्रहs. Point out the lordship of ग्रहs regarding their राशिs.

23. ग्रहाणाम् परिचयं प्रदाय प्रत्येकं भ्रमणवर्षाणि प्रतिपादयत।
ग्रहों का परिचय देते हुए प्रत्येक के भ्रमण वर्षों का प्रतिपादन करें।
Giving the identify of ग्रहs describe the going round years of each ग्रह.

24. मुहूर्तविषयं विवेचयत।
मुहूर्त विषय का विवेचन कीजिए।
Explain the subject of मुहूर्त.

25. वारक्रमस्य वैज्ञानिकं खगोलशास्त्रीयञ्च महत्वं प्रतिपादयत।
वारक्रम का वैज्ञानिक तथा खगोलशास्त्रीय महत्व प्रतिपादित करें।
Bringout the scientific and Astronomical importance of वारक्रम.

व्याकरणम्

21. शब्दानुशासनस्य प्रयोजनानि निरूपयत।
शब्दानुशासन के प्रयोजनों का निरूपण कीजिए।
Discuss the advantages of the शब्दानुशासन.

22. व्याकरणदर्शनानुसारेण स्फोटभेदान् वर्णयत।
व्याकरणदर्शन के अनुसार स्फोट के भेदों का वर्णन कीजिए।
Describe the different types of स्फोट according to व्याकरणदर्शन.

23. ध्वनेः स्वरूपं शब्दज्ञाने च तस्य हेतुत्वं निरूपयत।
ध्वनि का स्वरूप और शब्दज्ञान में उसका हेतुत्वसिद्ध कीजिए।
Explain the nature of ध्वनि and examine its role in शब्दज्ञान.

24. शब्दार्थसंबन्धविषये महाभाष्यकारमतं स्पष्टयत।
शब्द और अर्थ के संबंध के विषय में महाभाष्यकार का मत स्पष्ट कीजिए।
Examine the view of भाष्यकार on the relationship of word and its meaning.

25. अपत्यार्थे विहितान् तद्धितप्रत्ययान् ससूत्रं सोदाहरणं च वर्णयत।
अपत्यार्थ में विहित तद्धित प्रत्ययों का सूत्र एवं उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।
Explain तद्धितप्रत्यय in the sense of अपत्यार्थ with rules and examples.

मीमांसा

21. श्रौतयागेषु अग्निहोत्रं विवेचयत।
श्रौतयागों में अग्निहोत्र का विचार कीजिए।
Describe the अग्निहोत्र in श्रौतयागs.

22. मीमांसानुसारं वेदानामपौरुषेयत्वं प्रतिपादयत।
मीमांसा के अनुसार वेदों की अपौरुषेयता। प्रतिपादन कीजिए।
Establish the अपौरुषेयता of the वेदs according to मीमांसा.

23. 'दर्शपौर्णमासाभ्यां स्वर्गकामो यजेत' – इति वाक्यं मीमांसादृष्ट्या व्याख्यां कुरुत।
'दर्शपौर्णमासाभ्यां स्वर्गकामो यजेत' – इस वाक्य की मीमांसा दृष्टि से व्याख्या कीजिए।
Explain the following sentence on the lines of 'दर्शपौर्णमासाभ्यां स्वर्गकामो यजेत' according to मीमांसा.

24. अर्थवादं सोपपत्तिकं निरूपयत।
अर्थवाद का उपपत्ति सहित निरूपण कीजिए।
Explain अर्थवाद with illustrations.

25. विष्णुमहायज्ञं सविस्तरं प्रतिपादयत।
विष्णुमहायज्ञ का विस्तारपूर्वक प्रतिपादन कीजिए।
Describe elaborately the विष्णुमहायज्ञ.

नव्यन्यायः

21. तमसः दशमद्रव्यत्वं निराकुरुत।
तमस की दशमद्रव्यता का निराकरण कीजिए।
Reject तमस् as a tenth substance.

22. करणस्वरूपं विवृणुत।
करण का स्वरूप निर्धारित कीजिए।
Elucidate the characteristics of करण.

23. मनसः इन्द्रियत्वं आत्मनः पृथक्त्वं च साधनीयम्।
मन का इन्द्रियत्व तथा आत्मा से उसकी पृथकता सिद्ध कीजिए।
Establish that मनस् is a sense-organ and is different from that of आत्मा.

24. अनुमानप्रमाणं लक्षणप्रभेदाभ्यां विवृणुत।
लक्षण और भेद बताते हुए अनुमानप्रमाण का वर्णन कीजिए।
Explain अनुमानप्रमाण with its definition and varieties.

25. वाक्यार्थज्ञानहेतव: के? तेषां स्वरूपं सोदाहरणं प्रदर्शयत।
वाक्यार्थज्ञान के हेतु क्या है? उन का स्वरूप उदाहरण सहित प्रदर्शन कीजिए।
What are the वाक्यार्थज्ञानहेतुs ? Bring out their nature with suitable examples.

सांख्ययोगौ

21. सांख्यमताभिमतानि प्रमाणानि विवृणुत।
सांख्यदर्शन में अभीष्ठ प्रमाणों का वर्णन कीजिए।
Explain प्रमाणs acceptable to सांख्यमत.

22. कपिलमनुसृत्य सृष्टिप्रकारं विशदयत।
कपिल के अनुसार सृष्टि की प्रक्रिया का विवेचन कीजिए।
Bring out the process of creation as explained by कपिल.

23. योगशब्दस्य स्वारस्यं दार्शनिकदृष्ट्या विशदयत।
दार्शनिक दृष्टि से योगदर्शन के स्वारस्य को स्पष्ट कीजिए।
Propound the significance of the term योग from philosophical point of view.

24. योगमतमवलम्ब्य ईश्वरस्वरूपं निरूपयत।
योगदर्शन में प्रतिपादित दिशा में ईश्वरस्वरूप को निरूपित कीजिए।
Elucidate the nature of इश्वर according to योगदर्शन.

25. अष्टाङ्गानां परिचयं प्रयोजनं च प्रदेयम्।
योग के आठ् अङ्गों का परिचय एवं उन का प्रयोजन बताइए।
Enunciate and state the purpose of अष्टाङ्गs.

तुलनात्मकदर्शनम्

21. प्रमाणविषये न्यायजैनदर्शनयो: तारतम्यं प्रस्तावयत।
प्रमाण के विषय में न्याय और जैन दर्शन के तारतम्य को स्पष्ट कीजिए।
Bring out the difference between न्याय and जैन systems relating to प्रमाणs.

22. जैन-बौद्ध दर्शनयो: सिद्धान्तसाम्यं प्रदर्शयत।
जैनदर्शन और बौद्ध दर्शन के सिद्धान्तों में साम्य प्रदर्शित कीजिए।
Highlight the similarities in the doctrines of जैन and बौद्ध दर्शनs.

23. विवर्तवाद परिणामवादयोः अन्तरं विवृणुत।
विवर्तवाद और परिणामवाद में अन्तर बताइए।
Point out the difference between परिणामवाद and विवर्तवाद.

24. आस्तिकदर्शनेषु समानसिद्धान्तान् प्रदर्शयत।
आस्तिकदर्शनों के समानसिद्धान्तों का प्रदर्शन कीजिए।
State the similar issues in आस्तिकदर्शनs.

25. भौतिकवादस्य मानवतावादस्य च साम्यवैषम्ये विमृशत।
भौतिकवाद और मानवतावाद का साम्य और वैषम्य विमर्श कीजिए।
Discuss the similarities and dissimilarities between भौतिकवाद and मानवतावाद.

शुक्लयजुर्वेदः

21. वेदस्य कालनिर्धारणं कुरुत।
वेद के काल का निर्धारण कीजिए।
Examine the date of वेदs.

22. उपनिषत्परिचयप्रदानपूर्वकं कठोपनिषदः वैशिष्ट्यं लिखत।
उपनिषदों का परिचय देते हुए कठोपनिषद् की विशेषताएँ बताइए।
Giving an idea on उपनिषद्s, describe the special features of कठोपनिषद्.

23. निरुक्तस्य स्वरूपं प्रदर्शयन् तस्य महत्त्वं प्रतिपादयत।
निरुक्त के स्वरूप को बताते हुए उसके महत्व को प्रतिपादित कीजिए।
Mentioning the nature of निरुक्त, explain the importance of निरुक्त.

24. शुक्लयजुर्वेदीयब्राह्मणस्य वैशिष्ट्यं लिखत।
शुक्लयजुर्वेदीयब्राह्मण की विशेषताएँ लिखिए।
Write the characteristics of शुक्लयजुर्वेदीयब्राह्मण.

25. गृह्यसूत्राणामुपयोगितां वर्णयत।
गृह्यसूत्रों की उपयोगिता का वर्णन कीजिए।
Describe utility of गृह्यसूत्रs.

मध्ववेदान्तः

21. मध्ववेदान्तदृष्ट्या प्रमाणलक्षणं सप्रभेदं निरुपयत।
मध्ववेदान्त की दृष्टि से प्रमाण का लक्षण करते हुए उस के भेद बताइए।
Discuss the definition and divisions of प्रमाण according to मध्ववेदान्त.

22. ब्रह्मात्मैक्यस्य याथार्थ्यं न संभवतीतिमध्ववेदान्तरीत्या प्रतिपादयत।
ब्रह्मात्मैक्यस्य याथार्थ्यं न संभवति – इस वाक्य की व्याख्या मध्ववेदान्त के सन्दर्भ में कीजिए।
ब्रह्मात्मैक्यस्य याथार्थ्यं न संभवति - Explain with reference to मध्व.

23. 'अहं ब्रह्मास्मि' इति वाक्यस्यार्थं द्वैतदिशा विमृशत।
'अहं ब्रह्मास्मि' इस वाक्य के अर्थ पर द्वैतवेदान्त दृष्टि से विचार कीजिए।
Explain the meaning of the sentence 'अहं ब्रह्मास्मि' according to dvaitavedanta.

24. ख्यातिः कतिविधा? मध्वाभिमतं ख्यातिं विशदयत।
ख्याति कितने प्रकार की हैं? मध्ववेदान्त की दृष्टि से ख्याति को स्पष्ट कीजिए।
How many types are there for ख्यातिः ? Explain ख्यातिः acceptable to मध्व.

25. 'विष्णोः सर्वोत्तमत्वमेव सर्वशास्त्रार्थत्वम्' व्याख्यात।
'विष्णोः सर्वोत्तमत्वमेव सर्वशास्त्रार्थत्वम्' इसकी व्याख्या कीजिए।
'विष्णोः सर्वोत्तमत्वमेव सर्वशास्त्रार्थत्वम्' - Explain.

धर्मशास्त्रम्

21. धर्मस्वरूपं तत् प्रमाणानि च निरूपयत।
धर्म के स्वरूप और उसके प्रमाणों का निरूपण कीजिए।
Explain the nature of धर्म and its sources.

22. पुत्रभेदान् तत् स्वरूपं च लिखत।
पुत्र कितने प्रकार के होते है, लिखकर उनके स्वरूप लिखिए।
State the kinds of sons and their characteristics.

23. विवाहभेदान् तत् स्वरूपं च प्रतिपादयत।
विवाह के भेदों का निर्देश कर उनके स्वरूप का प्रतिपादन कीजिए।
Describe the विवाह and the different types of विवाहs.

24. राजधर्मान् विवेचयत्।
राजधर्म का विचार करें।
State in details the duties of King.

25. पञ्चमहायज्ञान् प्रतिपादयत।
पञ्चमहायज्ञ का प्रतिपादन कीजिए।
Explain the पञ्चमहायज्ञs.

साहित्यम्

21. मम्मटमनुसृत्य काव्यप्रयोजनानि निरूपणीयानि।
मम्मट के अनुसार काव्य के प्रयोजनों का निरूपण कीजिए।
Discuss the प्रयोजन of काव्य according to Mammata.

22. 'वक्रोक्तिः काव्य जीवितम्' इति वाक्यं विमृशत।
'वक्रोक्तिः काव्य जीवितम्' इस कथन पर विमर्श कीजिए।
'वक्रोक्तिः काव्य जीवितम्' – Discuss.

23. रीतिभेदान्निर्दिश्य वैदर्भीं रीतिं निरूपयत।
रीति के भेदों का निर्देश कर वैदर्भी रीति का निरूपण कीजिए।
Mention the different kinds of रीति and discuss the nature of वैदर्भी.

24. ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः।
उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः।।
– कारिकेयं व्याख्यायताम्।
– इस कारिका की व्याख्या कीजिए।
- Explain the verse.

25. लक्षणायाः भेदान् स्पष्टयत।
लक्षणा के भेदों को स्पष्ट कीजिए।
Clearly mention the divisions of लक्षणा.

पुराणेतिहासौ

21. श्रीमद्भागवतपुराणस्य महत्त्वं प्रतिपादयत।
श्रीमद्भागवतपुराण का महत्त्व बताइए।
Describe the importance of श्रीमद्भागवतपुराण.

22. गृहस्थकर्त्तव्यानि निरूपयत।
गृहस्थ के कर्त्तव्यों का निरूपण कीजिए।
Explain the duties of गृहस्थ.

23. महाभारतकालिकं सामाजिकं जीवनं विशदयत।
महाभारतकालीन सामाजिक जीवन प्रस्तुत कीजिए।
Point out the social life as reflected in महाभारत.

24. महाभारते वर्णितस्य विदुरनीतेः महत्त्वं लिखत।
महाभारत में वर्णित विदुरनीति के महत्त्व का वर्णन कीजिए।
Bring out the importance of विदुरनीति as found in महाभारत.

25. पुराणोक्तस्य मणिद्वीपस्य वर्णनं कुरुत।
पुराणोक्त मणिद्वीप का वर्णन कीजिए।
Describe मणिद्वीप as found in पुराणs.

आगमः

21. 'आगम' शब्दं निरुच्य तस्य नामान्तराणि प्रदत्त।
आगम शब्द का निर्वचन करते हुए उसके अन्य नाम बताइए।
Etymologically explaining the term आगम, state its synonyms.

22. आगमेषु विहितं आराधनाविधानं विशदयत।
आगमशास्त्रों में विहित आराधना का विधान निरूपण कीजिए।
Explain the mode of worship enjoyned in the आगमs.

23. शाक्तागमानां, शाक्ततत्त्वानां च परिचयं प्रदत्त।
शाक्तागमों तथा शाक्तवत्त्वों के परिचय दीजिए।
Give an account of शाक्तेयागमs and शाक्तेवत्त्वs.

24. आगमान्तर्गतक्रियापादानां विषयप्रस्तावं निरूपयत।
आगमों के अन्तर्गत क्रियापादों के विषयप्रस्ताव कीजिए।
Bring out the subject matter of क्रियापादs found in the आगमs.

25. प्रत्यभिज्ञादर्शनस्य प्रधानतत्त्वानि निरूपयत।
प्रत्यभिज्ञादर्शन के प्रमुख तत्त्वों का निरूपण कीजिए।
Set forth the important doctrines of प्रत्यभिज्ञादर्शन.

अद्वैतवेदान्तः

21. ब्रह्म जगतः उपादानकारणं निमित्तकारणं चेति स्थापयत।
ब्रह्म जगत का उपादानकारण और निमित्तकारण है - इस मत को सिद्ध कीजिए।
Establish that ब्रह्म is the उपादानकारणं and निमित्तकारणं of the जगत्.

22. प्रधानं जगत्कारणमिति सांख्यमतं खण्डयत।
प्रधान जगत का कारण है – सांख्य के इस मत का खण्डन् कीजिए।
Refute the samkhya view is that प्रधानं is the cause of जगत्.

23. अद्वैतमतानुसारेण जीवस्वरूपं वर्णयत।
अद्वैतमत के अनुसार जीव के स्वरूप का वर्णन कीजिए।
Describe the nature of जीव according to अद्वैतवेदान्त.

24. प्रस्थानत्रयीमधिकृत्य उपन्यासमेकं आरचयत।
प्रस्थानत्रयी पर एक निबन्ध लिखिए।
Write an essay on प्रस्थानत्रयी.

25. तत्त्वमसीति महावाक्यस्य अखण्डार्थत्वं बोधयत।
'तत्त्वमसि' इस महावाक्य की अखण्डार्थता पर प्रकाशन डालिए।
Explain the अखण्डार्थत्व of महावाक्य तत्त्वमसि.

खण्डम् – IV
खण्ड – IV
SECTION - IV

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे चत्वारिंशदङ्कात्मकः (40) निबन्धाश्रेणीकः एकः प्रश्नोऽस्ति, यस्योत्तरं निम्नविषयेवु अन्यतममाश्रित्य प्रायः सहस्रमितैः (1000) शब्दैरपेक्ष्यते।

(40x1=40 अंङ्काः)

नोट : इस खंड में एक चालीस (40) अंकों का निबन्धात्मक प्रश्न है जिसका उत्तर निम्नलिखित विषयों में से केवल एक पर, लगभग एक हजार (1000) शब्दों में अपेक्षित है।

(40x1=40 अंक)

Note : This section consists of one essay type question of forty (40) marks to be answered in about one thousand (1000) words on any of the following topics.

(40x1=40 marks)

26. (क) वर्णाश्रमव्यवस्था।

(ख) श्रौतयागाः।

(ग) भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा।

(घ) सा विद्या या विमुक्तये।

(ङ) प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रम्।

(च) ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या।

(छ) रम्या रामायणी कथा।

(ज) माघे सन्ति त्रयो गुणाः।

FOR OFFICE USE ONLY							
Marks Obtained							
Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained
1		26		51		76	
2		27		52		77	
3		28		53		78	
4		29		54		79	
5		30		55		80	
6		31		56		81	
7		32		57		82	
8		33		58		83	
9		34		59		84	
10		35		60		85	
11		36		61		86	
12		37		62		87	
13		38		63		88	
14		39		64		89	
15		40		65		90	
16		41		66		91	
17		42		67		92	
18		43		68		93	
19		44		69		94	
20		45		70		95	
21		46		71		96	
22		47		72		97	
23		48		73		98	
24		49		74		99	
25		50		75		100	

Total Marks Obtained (in words) .....

(in figures) .....

Signature & Name of the Coordinator .....

(Evaluation) Date .....